एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

रतालू की खेती

(*भरत कुमार[1] एवं मुकेश कुमार यादव[2])
[1]श्रीनाथजी कृषि महाविद्यालय, नाथद्वारा
[2]राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: chouhan.bharat58@gmail.com

रतालू एक तरह की जमीन में उगने (कंद) वाली सब्जी के रूप में काम लिया जाता है। बाजार में सब्जियों की मांग को देखते हुए किसानों ने भी अपनी आय को बढ़ाने के लिए मुनाफे वाली खेती करना शुरू कर दिया है। रतालू को पका कर, उबालकर, भून कर , तलकर , सेंक कर खाया जाता है। रतालू से सब्जी, चिप्स, वेफर आदि उत्पाद बनाए जाते हैं। रतालू में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, विटामिन और खनिज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं। डायबिटीज, थायराइड ,कैंसर, बवासीर,ब्लड प्रेशर और हृदय की गति को भी कंट्रोल में रखता है। रतालू की खेती मुख्य अफ्रीका में होती है। अब भारत के विभिन्न राज्यों में भी रतालू की खेती होने लगी है।

राजस्थान में अधिकतर उदयपुर संभाग में इसकी खेती की जाती है , यहां के रतालू की गुजरात, मध्य प्रदेश में अधिकतर मांग रहती है। रतालू की खेती के साथ बरसीम , रिजका उगा कर अधिक मुनाफा लिया जा सकता है। रतालू की पत्तियां पान की पत्तियों जैसी दिखती है तथा गुदा सफेद या जामुनी रंग का होता है।

जलवायु व मिट्टी :- रतालू की खेती गर्म और आर्द्र जलवायु में अच्छा उत्पादन मिलता है 25 से 35 डिग्री तापमान में रतालू की खेती आसानी से की जा सकती है। रतालू की खेती करने के लिए दोमट मृदा अच्छी मानी जाती है तथा खेत में जलभराव नहीं होना चाहिए वरना इसके कंद जल्दी सड़ जाते हैं।

किस्में :- रतालू में दो तरह के किस्में होती है , सफेद सफेद व लाल किस्में होती है। लाल रतालू कि गुजरात में तथा सफेद रतालू की मध्यप्रदेश में ज्यादातर मांग रहती है।

खेत की तैयारी :- रतालू की खेती के लिए 3 से 4 जुताई की जाती है जुताई के बाद 50 सेंटीमीटर चौड़ाई की बेडस बना देते हैं, इन बेड पर 30 सेंटीमीटर की दूरी पर रतालू के 40 से 50 ग्राम तक के टुकड़े बीज के रूप में काम लिए जाते हैं। 20 से 30 क्विंटल बीज की एक हेक्टर में आवश्यकता होती है, बुवाई से पूर्व रतालू के टुकड़ों को 0.2% मैनकोज़ेब (फफूंद नाशक) के घोल में 4 से 5 मिनट तक उपचारित करने के बाद इसकी बुवाई करनी चाहिए।

रतालू की खेती का सही समय :- रतालू की खेती का सही समय अप्रैल से जून तक का माना जाता है। लेकिन कई जगहों पर किसान इसकी बुवाई मार्च माह में ही कर देते हैं और नवंबर में रतालू निकालने का काम शुरू हो जाता है।

खाद व उर्वरक खेत :- तैयारी के दौरान 200 क्विंटल गोबरकी खाद, 60 किलोग्राम फास्फोरस, 100 किलोग्राम पोटाश की मात्रा जुताई के समय बेड में मिला देते हैं।

नाइट्रोजन 50 किलोग्राम की मात्रा दो समान भागों में बुवाई के बाद दूसरे और तीसरे महीने में पौधों के चारों और डालकर सिंचाई कर देनी चाहिए।

रतालू में अंतर सस्य क्रियाएं

1. खरपतवार नियंत्रण :- रतालू में खरपतवार नियंत्रण करना अति आवश्यक है इसके लिए पहली निराई गुड़ाई जब 50 % अंकुरण हो जाता है तब तथा दूसरी बार निराई गुड़ाई 1 महीने के अंतराल पर करनी चाहिए।
2. सिंचाई :- रतालू में बुवाई के तुरंत बाद सिंचाई की आवश्यकता होती है उसके बाद 10 से 15 दिन के अंतराल पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। बूंद बूंद सिंचाई का प्रयोग कर कम पानी में अधिक मुनाफा ले सकते हैं तथा खरपतवार नियंत्रण करना भी आसान होता है।
3. मिट्टी चढ़ाना :- रतालू में बारिश होने के कारण कंद बार दिखाई देते हैं तो उनके ऊपर मिट्टी चढ़ाने चाहिए जिससे उपजाऊ मिट्टी का संरक्षण होने के साथ कंद भी अधिक वृद्धि कर सकें।

खुदाई व उपज :- रतालू की फसल 8 से 9 महीने में तैयार हो जाती है। रतालू के पौधों की पत्तियां ज्यादातर पीली पड़ जाती है तब सावधानी से कंद की खुदाई करके निकाल देते हैं। एक हेक्टर से 350 से 400 क्विंटल उत्पादन प्राप्त हो जाता है।